दादा भगवान परिवार का
जुलाई २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

एक कोयल थी। मोर की सुंदरता और उसका डान्स देखकर उसे लगता कि 'मुझे भी मोर के जैसा बनना है।' एक दिन उसने जंगल में मोर के गिरे हुए पंख देखे। उसने पंख लेकर अपने शरीर पर लगा लिए। वह खुश होकर डान्स करने लगी। जंगल के सभी जानवर इकट्ठा हो गए। कुछ ही देर में उसके सारे पंख झड़ गए। सभी ने कोयल का बहुत मज़ाक उड़ाया। बुद्धिमान उल्लू ने उदास कोयल से कहा, 'बेटा, तुम्हें मोर जैसा बनने की क्या ज़रूरत है? तुम्हारी मौलिकता (ओरिजनैलिटी) तो तुम्हारी मधुर आवाज़ है। तुम वह क्यों भूल गई?'

क्या हम भी कभी-कभी अपने मूल गुण और अपनी पहचान भूलकर नकल करने में लग जाते हैं? चलो, इस अंक में देखते हैं, नकल करने से क्या होता है? किसकी नकल करना उचित है? अनन्या ने गिरगिट से क्या सीखा और आर्यावर्त राज्य का सच्चा उत्तराधिकारी कौन बना? थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स ने रिवरफ्रन्ट पर क्या किया? और हाँ, आलू-चिली की भी एक मज़ेदार स्टोरी है। पढ़ना मत भूलना।

-डिम्पलभाई मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

July, 2025
Year 13, Issue : 04
Conti. Issue No.: 148
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन: ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

ज्ञानी कहते हैं...

नकल करके जीना अच्छा या असल काम करना चाहिए? बच्चे एक-दूसरे की नकल करते हैं। हम नकल क्यों करें? जिंदगी में किसी की भी नकल नहीं करनी चाहिए।

हमें तो असल काम करने चाहिए। नकल नहीं करनी चाहिए। नकल तो सभी करते हैं। कपड़े और हेयर स्टाइल में नकल। उसने 'नाइकी' पहना है तो मैं भी पहनूँगा। उसने ऐसा किया तो मैं भी वैसा ही करूँगा। एक-दूसरे का देखकर उसके जैसी स्टाइल मारते हैं। चोरी करना, कॉपी करना, लोगों का ऐसा देख-देखकर सभी गलत चीज़ों की नकल करते हैं। कुछ भी समझपूर्वक है ही कहाँ? क्या कोई भी व्यक्ति ज्ञानी, कृष्ण भगवान, राम भगवान या महावीर भगवान की नकल करता है? ऐसी नकल करते हों तो अच्छा।

हमें तो असल काम करने चाहिए। तब कहीं हमारा मनुष्य जीवन सार्थक कहा जाएगा। हमें अंदर खुमारी होनी चाहिए कि मैं कौन हूँ, मेरी माता कितनी अच्छी हैं, कितनी अच्छी शिक्षा देती हैं। मुझे उनकी बात माननी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मैं तो सही रास्ते पर ही चलना चाहता हूँ लेकिन फिर भी गलत रास्ते पर चला जाता हूँ। गलत बातों की नकल कर बैठता हूँ। तो क्या करूँ?

नीरू माँ : पता है कि यह सही है और यह गलत है लेकिन गलत छूटता नहीं। और हमारे पास सही रास्ते पर जाने की शक्ति नहीं है। यह शक्ति प्रकट करनी पड़ती है। यह शक्ति प्रकट करने के लिए अच्छा संग ज़रूरी है।

चलो खेलें...

नीचे दिए गए चित्र में कौन-कौन से जनावर हैं वह पता लगाएँ।

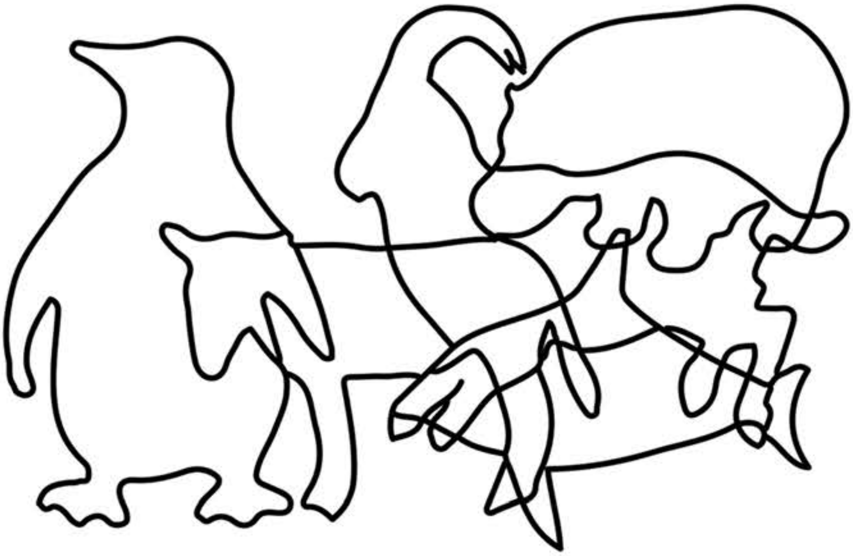

यहाँ दिए गए चित्र में से कोई भी पाँच मैचस्टिक निकालकर उसमें से एकसमान पाँच त्रिकोण बनाएँ।

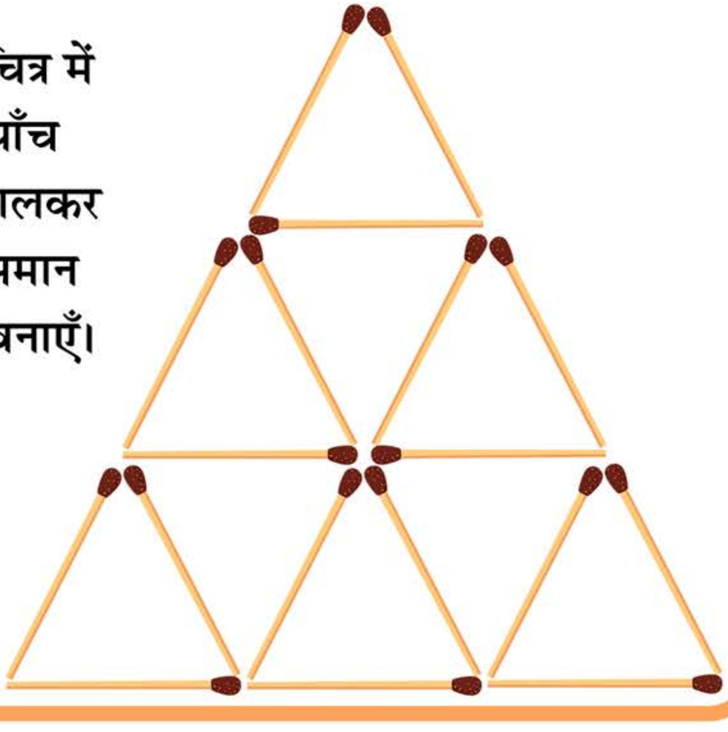

किसी की नकल करे
वह नकली कहलाता है
और जो अपनी समझ से,
अपने तरीके से चलते हैं वे
असल कहलाते हैं।

यह तो

समझ का अनुकरण करना
है, वर्तन का अनुकरण
(नकल) नहीं करना है।

उदाहरण के तौर पर : इस अंक
की 'उत्तराधिकारी' कहानी में
राजवीर राजा जी की समझ का
अनुकरण करता है और तेजपाल
उनके वर्तन का।

जो लोग दूसरों की नकल करते हैं, अगर हम उनकी नकल करें तो वह मूर्खता कहलाएगी।
नई ही बात है!
कोई गलत काम करता है तो उसे देखकर हम गलत करना सीख जाते हैं, लेकिन अगर कोई सही काम करता है तो उसे देखकर सही करना नहीं सीखते। फिसलना आसान है, लेकिन चढ़ना कठिन है।

जो रंग बदले वह कौन?

आज मैंने एक नया हेयर स्टाइल ट्राइ किया। मेरे बालों को आगे से फोल्ड करके पीछे पीन लगाई। वैसे तो मैं हर रोज एक सिम्पल चोटी ही बनाती हूँ। लेकिन आज कुछ नया ट्राइ किया। अपने यूनिफॉर्म के शर्ट की आस्तीनें ऊपर चढ़ाई और आईने में देखकर सोचा, 'सुंदर लग रही हूँ! एकदम उनके जैसी।' जैसे ही क्लास में दाखिल हुई, लास्ट बेन्च से एक हाथ ऊपर उठा और मुझे इशारे से वहाँ बुलाया। मैं तेजी से उस ओर गई।

'अरे वाह अनन्या! आज तुम बहुत सुंदर लग रही हो।' जीना ने मेरे हाथ पर ताली दी। 'स्टाइल और हेयर स्टाइल... कहना पड़ेगा, यार। जल्दी सीख गई!' टिया बोली। वह हर दिन

नया हेयर स्टाइल बनाती थी। आज मैंने उसके जैसा ही हेयर स्टाइल बनाया था।

'अब लग रही है न, बिल्कुल हमारे जैसी।' अंत में रेयल ने अपने स्टाइल में मेरे कंधे पर हाथ रखकर मोहर लगाई। रेयल ने मेरी तरह ही यूनिफॉर्म के शर्ट की आस्तीनें फोल्ड कर रखी थीं। नहीं, सच कहूँ तो मैंने उसे देखकर यह स्टाइल की थी।

मन में विचार आने लगे। सातवीं कक्षा में नया स्कूल जॉइन किए हुए मुझे चार सप्ताह हो गए थे। कई दिनों तक किसी ने मुझसे बात नहीं की। हमेशा की तरह मैं लगभग सभी के लिए इन्विज़िबल (अदृश्य) थी। फिर अचानक एक दिन क्लास की सबसे फेमस लड़की रेयल ने रिसेस में मुझे उसके ग्रुप के साथ नाश्ता करने बुलाया। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही। लेकिन फिर पता चला कि रेयल की मम्मी और मेरी मम्मी ऑफिस में फ्रेन्ड्स हैं और मेरी मम्मी ने ही रेयल की मम्मी से रिक्वेस्ट (विनती) की थी कि रेयल मेरे साथ फ्रेन्ड्शिप करे। और

बस, फिर क्या चाहिए था, उस दिन से मैं 'रेयल ऐन्ड ग्रुप' का हिस्सा बन गई और सभी मुझे पहचानने लगे।

'अबे, कहाँ खो गई!' जीना मुझे विचारों से वापस लाई और फिर एकदम दुःखी होकर बोली, 'यार, कितना बोरिंग क्लास होगा!'

टीचर के क्लास में आते ही सब चुप हो गए। हम सब ने नोटबुक के पीछे के पन्ने पर लिख-लिखकर बातें कीं और इस तरह क्लास का समय बीताया। मुझे ऐसा करना अच्छा नहीं लग रहा था। अंदर कुछ चुभ रहा था। लेकिन उनके साथ रहने के लिए मैं उनकी तरह ही करती जा रही थी।

रिसेस की बेल बजी और सभी फटाक से खड़े हो गए। क्लास से बाहर निकलते समय मेरी नज़र एक लड़की पर पड़ी। पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे वह मेरे जैसी लगी। साथ ही मैंने ये भी सोचा,

मेरी तरह मतलब? अभी तो मुझे यही नहीं पता कि मैं किसके जैसी बन गई हूँ!

मेरे फ्रेन्ड्स सोच रहे थे कि कैन्टीन से क्या ऑर्डर किया जाए। मैं कहीं खोई हुई थी।

'तुम क्या खाओगी?' टिया ने मुझसे पूछा।

'तुम लोग क्या ऑर्डर कर रहे हो?'

'वही, जो रोज़ करते हैं।'

'बस, तो मेरे लिए भी वही।' अब ऐसा ही होता था। कई दिनों से मैंने अपने बारे में कुछ भी सोचना छोड़ दिया था। मुझे लगता था कि अगर मैं उनके जैसा करूँगी तो वे मुझे अकेला नहीं छोड़ेंगी। इसलिए मैं सिर्फ उनकी तरह करती ही नहीं थी, बल्कि उनकी तरह बोलती भी थी। मेरे शब्द, मेरे बोलने की स्टाइल, सब कुछ उनके जैसा हो गया था। मैं ऐसे शब्द बोलना सीख गई थी, जो मैंने पहले कभी नहीं बोले थे।

सब कैन्टीन में आए। कुछ लड़कियाँ 'नेचर पार्क' की बातें कर रही थीं। पता चला कि एक सप्ताह के बाद स्कूल की ओर से नेचर पार्क में फील्ड ट्रिप है।

'नेचर पार्क! बिल्कुल बोरिंग!' रेयल ने कहा। जीना और टिया ने हर बार की तरह रेयल की 'हाँ' में 'हाँ' मिला दी। मैंने कुछ नहीं कहा और किसी ने मुझसे कुछ पूछा भी नहीं।

फील्ड ट्रिप के दिन टीचर ने सारे बच्चों को रोल नंबर के अनुसार दो बसों में बाँट दिया। मैं रेयल, जीना और टिया से अलग हो गई। बस में मुझे उसी लड़की के पास जगह मिली, जिसे देखकर मुझे लगा था कि

वह मेरे जैसी है। उसका नाम 'प्रिया' था। प्रिया और मेरे शौक एक जैसे ही थे। उसे भी मेरी तरह घूमना और पढ़ना पसंद था। बातें करते-करते कब नेचर पार्क आ गया, पता ही नहीं चला। प्रिया के साथ बात करके मुझे हल्का महसूस हुआ। शायद इसलिए कि मैं जैसी थी वैसी ही रही। 'वह मुझे स्वीकारे', इस इच्छा से मैंने कोई दिखावा नहीं किया। आज पहली बार ऐसा लगा कि जैसे मैं मेरे अपने क्लासमेट्स के साथ हूँ। बाकी, रोज़ तो ऐसा ही लगता था मानो मैं तीन फ्रेन्ड्स की चमची हूँ।

नेचर पार्क पहुँचने के बाद बच्चों को दो बैचों में बाँट दिया गया। मेरा बैच रेयल, जीना और टिया से अलग था। सबसे पहले हम चिड़ियाघर गए। एक गाइड हमें अलग-अलग टाइप के जानवरों के बारे में समझा रहे थे।

'बच्चों, यह गिरगिट है। किसी को पता है कि इस जानवर की क्या विशेषता है?' गाइड ने पूछा।

प्रिया ने हाथ उठाया, 'सर, आसपास के वातावरण के अनुसार से वह अपने शरीर का रंग बदलता है।'

'एकदम सही जवाब। गिरगिट वातावरण के अनुसार से अपना रंग बदलता है।'

मेरे पीछे खड़ी एक लड़की बोली, 'हमारे क्लास की कुछ लड़कियों की तरह!'

मुझे उसकी बात से दुःख लगा। मैं तो उसे पहचानती भी नहीं थी और शायद यह बात उसने मेरे लिए कही भी नहीं हो। लेकिन उसकी बात सही थी। मैं भी गिरगिट की तरह ही तो करती थी। मेरी आदतें, मेरे कपड़े, मेरा हेयर स्टाइल, अरे, यहाँ तक कि मेरे बोलने मेरा स्टाइल और शब्द भी 'रेयल ऐन्ड ग्रुप' जैसे हो गए थे!

चिड़ियाघर से निकलकर हम खाना खाने गए। खाते हुए प्रिया बोली, 'नूडल्स तो बहुत टेस्टी हैं।'

'हाँ, एकदम यमी', मैंने कहा। मुझे सचमुच में नूडल्स अच्छे लगे थे। मैंने प्रिया को खुश करने के लिए झूठ नहीं बोला था। मुझे याद नहीं कि आखिरी बार कब मैंने इस तरह सच बोला था। कई दिनों से तो मैं फ्रेन्ड्स की 'हाँ' में 'हाँ' ही मिला रही थी।

दिन कहाँ बीत गया उसका मुझे पता ही नहीं चला। रेयल, जीना और टिया से मेरा मिलना मुश्किल से थोड़े टाइम के लिए ही हुआ होगा। दूसरे दिन स्कूल में छुट्टी थी। पूरा दिन मुझे 'गिरगिट' की बात याद आती रही। एक गिरगिट की तरह मैं कब तक कर सकती हूँ?

अगले दिन जब मैं क्लास में दाखिल हुई तब फिर से लास्ट बेन्च से एक हाथ उठा। मैंने उस तरफ एक नज़र डाली और फिर प्रिया के डेस्क की ओर मुड़ गई। किसी को कुछ फर्क नहीं पड़ा। वे मुझ पर थोड़ा हँसे और हमेशा की तरह किसी को ढूँढकर उसे चिढ़ाने लगे।

मैं बहुत खुश हूँ। मुझे लगता है कि मुझे मेरा असली रंग मिल गया है। अब मुझे नकली रंगों की ज़रूरत नहीं है। अब से मैं जैसी हूँ वैसी ही रहूँगी। किसी को खुश करने के लिए अपने रंग नहीं बदलूँगी। बैग में से बुक निकालकर मैं क्लास शुरू होने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।

चलो खेलें...

नीचे दिए गए इमोजिस में उनके हाव-भाव के अनुसार कलर करें।

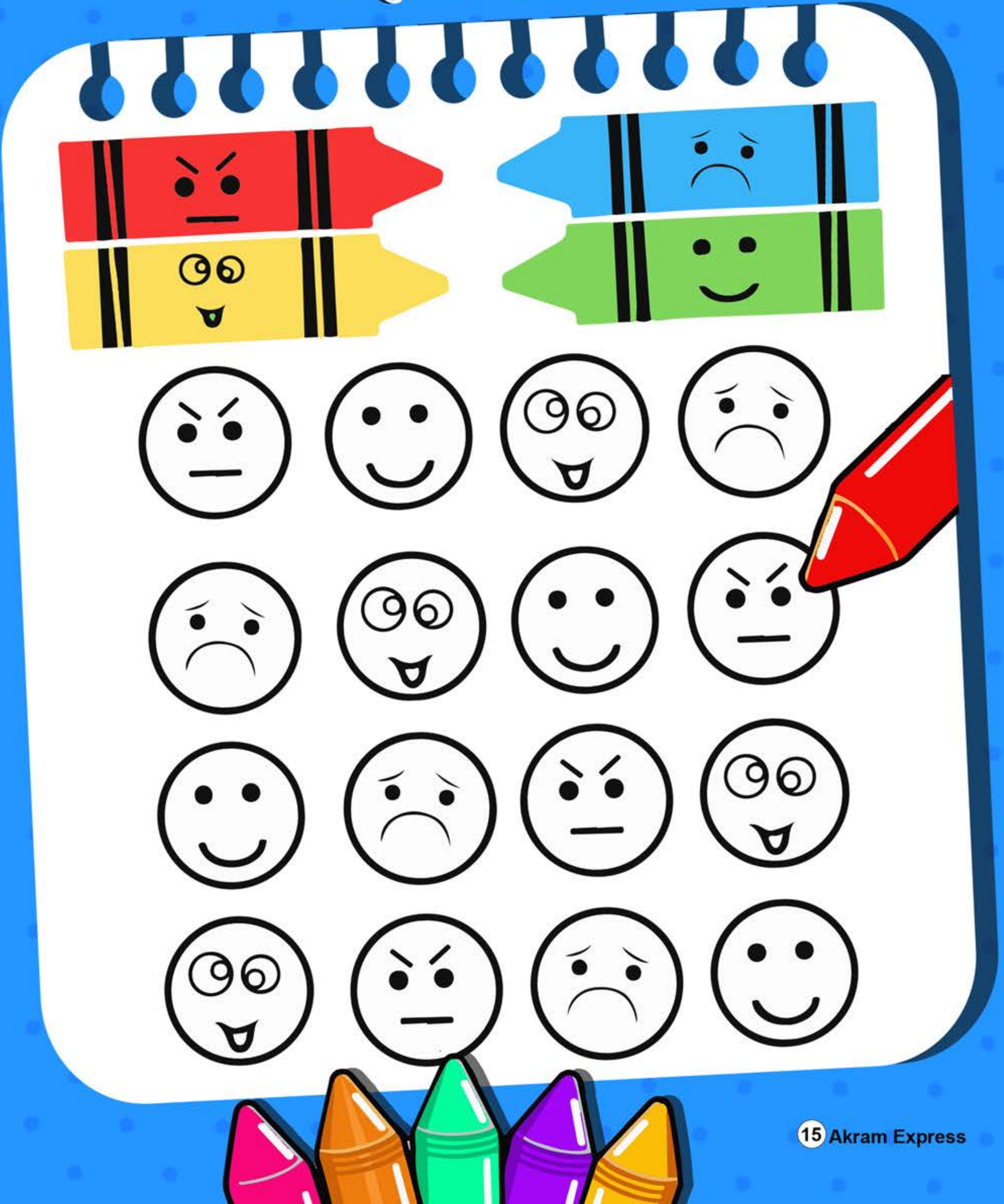

AALOO CHILLY

थीओ के कैफ़े में अपनी सरप्राइज़ पार्टी देखकर चिली बहुत खुश हो गया था। लेकिन पार्टी में कोको को देखकर उसे फिर से गरम-गरम लगने लगा। अब देखते हैं कि आगे चिली को क्या होता है।

सच कहूँ, कोको को पार्टी में देखकर मुझे कॉम्पिटिशन याद आ गया। आलू ने किस तरह मेरा साथ छोड़ दिया था! कैसे सब लोग मुझ पर हँस रहे थे! फिर से मुझे सब जलने लगा। मुझे लगा कि शायद कोको के पास रहने के कारण जल रहा है! अगर वह यहाँ से चली जाएगी तो सब ठंडा हो जाएगा।

मैं ऐसा सोच रहा था कि तभी थीओ और ज़ोई बाहर आ गए। 'अरे, यह क्या? कोको, तुम हमारे कैफ़े में आई! कॉम्पिटिशन की विनर, खुद!' तभी जिफ्फी आया और कहने लगा, 'तुम्हें हमारे साथ नेक्स्ट एड्वेन्चर पर आना है! हम खूब मज़े करेंगे।'

मेरे फ्रेन्ड्स होकर भी मुझे कभी एड्वेन्चर पर नहीं ले जाते और इस कोको ने एक कॉम्पिटिशन क्या जीत लिया, सभी उसके फैन हो गए। यह हो क्या रहा है?

तभी आलू मेरे बगल में आकर खड़ा हो गया और बोला, 'हाइ चिली! मुझे पता था कि तुम उड़कर यहीं आओगे!' और उसने मुझे एक बड़ी सी स्माइल दी। यह स्माइल बिल्कुल मेरे बेस्ट फ्रेन्ड आलू वाली स्माइल थी। मैंने उससे कहा, 'आलू, मुझे बहुत गरम-गरम लग रहा है।'

तभी रिज़ो कहीं से कैमरा लेकर आया और फोटो खींचते हुए उसने पूछा, 'कोको, कॉम्पिटिशन जीतकर कैसा

लग रहा है?’ कोको ने कहा, ‘मेरी सफलता का कारण मेरी मधुर आवाज़ और आलू का प्रोत्साहन है। मैं सोचती थी कि चिली को कोई हरा नहीं सकता। लेकिन आलू के कारण...’ मुझे लगा मैं उसकी बात नहीं सुन पाऊँगा। यह तो मेरी स्पीच थी। जीतने के बाद की मेरी स्पीच...!

मेरी ट्रॉफी, मेरी स्पीच, मेरा बेस्ट फ्रेन्ड आलू, मेरे सभी दूसरे फ्रेन्ड्स, सब कुछ कोको ले लेगी। अब मेरे शरीर में आग लग गई थी। मैंने आलू की तरफ देखा तो वह मेरे बदले कोको को स्माइल दे रहा था। मेरी आँखों में आँसू आ गए।

मुझे लगा, मुझे यहाँ रहना ही नहीं है।

सभी कोको के साथ बात करने में बिज़ी थे। मैं पार्टी छोड़कर वहाँ से चला गया।

आलू के विश्वास से ज्यादा कोको और पार्सली का डर सही साबित हुआ। अब? चिली को इतनी तकलीफ हो रही है, फिर भी आलू क्यों नहीं समझ रहा?

उत्तराधिकारी

आर्यावर्त के राजा धर्मकेतु के दो कुँवर थे। बड़ा बेटा तेजपाल शूरवीर और बुद्धिमान था। छोटा बेटा राजवीर शांत और शर्मीला था। कुछ सालों तक राज्य से दूर रहकर पढ़ाई करने के बाद जब राजवीर अपने राज्य वापस लौटा तो अपने बड़े भाई तेजपाल को देखकर दंग रह गया।
राजवीर : भैया, आप तो बिल्कुल पिताश्री जैसे ही लग रहे हो। तेजपाल हँसने लगा। उसने अपनी मूँछों पर ताव दिया और दो ताली बजाकर दास को बुलाया।
तेजपाल : यहाँ खंड में ही हमारे लिए भोजन की व्यवस्था करो।

तेजपाल की आवाज़, उसके बोलने का अंदाज आदि बिल्कुल राजा जी जैसे ही थे। और वह यों ही नहीं हो गया था। भविष्य में राजा बनने के लिए पिताजी का अनुकरण करते-करते तेजपाल अब बिल्कुल राजा जी की प्रतिकृति (उनके जैसा) ही बन गया था। राज्य में भी सभी तेजपाल को भविष्य के राजा के रूप में ही देखते थे।
एक दिन राजा जी ने अपने दोनों पुत्रों को बुलाया।
राजा : तुम लोगों की कुशलता को देखते हुए मैंने तुम दोनों को राज्य की कुछ जिम्मेदारियाँ सौंपने का निर्णय लिया है। आज से तेजपाल सेना की कमान संभालेगा और राजवीर मंत्री का सलाहकार बनेगा। दोनों ने खुशी से अपनी जिम्मेदारियाँ स्वीकार कर लीं।

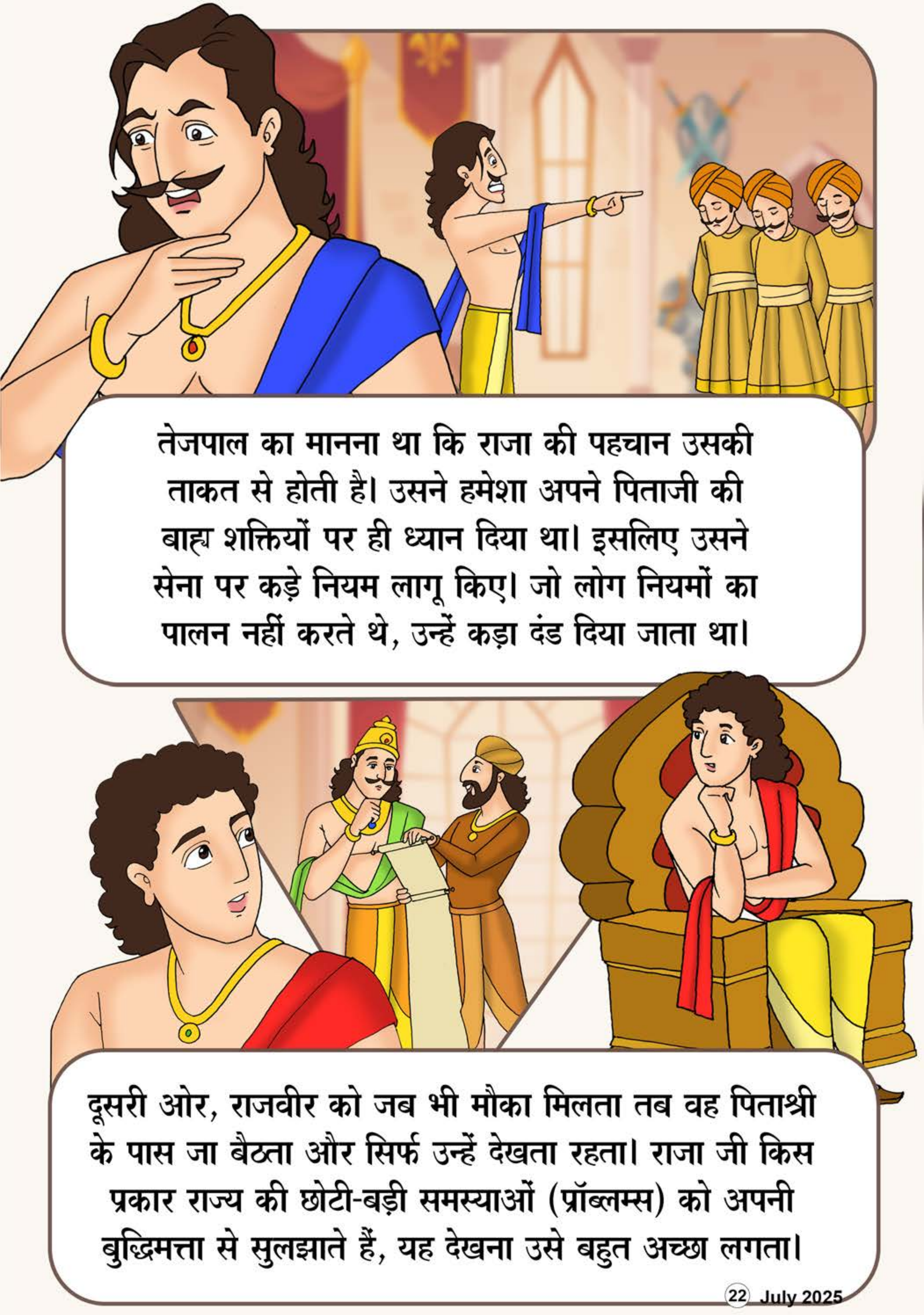
तेजपाल का मानना था कि राजा की पहचान उसकी ताकत से होती है। उसने हमेशा अपने पिताजी की बाह्य शक्तियों पर ही ध्यान दिया था। इसलिए उसने सेना पर कड़े नियम लागू किए। जो लोग नियमों का पालन नहीं करते थे, उन्हें कड़ा दंड दिया जाता था।
दूसरी ओर, राजवीर को जब भी मौका मिलता तब वह पिताश्री के पास जा बैठता और सिर्फ उन्हें देखता रहता। राजा जी किस प्रकार राज्य की छोटी-बड़ी समस्याओं (प्रॉब्लम्स) को अपनी बुद्धिमत्ता से सुलझाते हैं, यह देखना उसे बहुत अच्छा लगता।

राज्य के सलाहकार और मंत्री मन ही मन सोचते कि भले ही तेजपाल सख्त है लेकिन काम तो करता है न! राजवीर तो बिल्कुल आलसी है। काम-वाम कुछ करता नहीं है और सिर्फ अपने पिता के पास बैठकर ऐश करता है।
ऐसा करते हुए कुछ समय बीता। राजा जी की तबियत खराब रहने लगी। राजा जी ने सोचा कि अब भविष्य के राजा की घोषणा कर देनी चाहिए। मंत्रियों और सलाहकारों से बातचीत करने के बाद राजा जी को एहसास हुआ कि सभी को यही लगता है कि तेजपाल ही राजा के पद के लायक है।

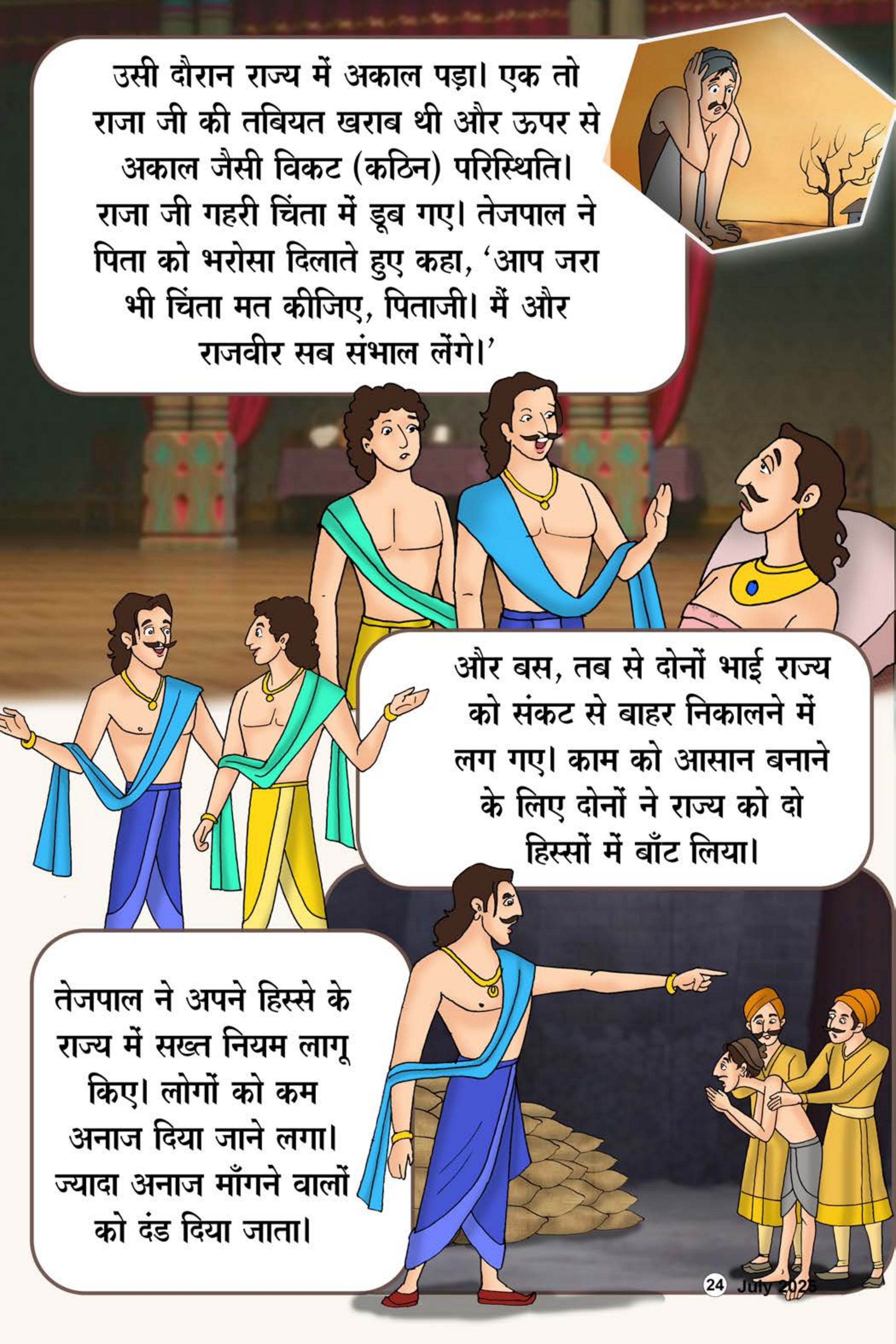
उसी दौरान राज्य में अकाल पड़ा। एक तो राजा जी की तबियत खराब थी और ऊपर से अकाल जैसी विकट (कठिन) परिस्थिति। राजा जी गहरी चिंता में डूब गए। तेजपाल ने पिता को भरोसा दिलाते हुए कहा, 'आप जरा भी चिंता मत कीजिए, पिताजी। मैं और राजवीर सब संभाल लेंगे।'
और बस, तब से दोनों भाई राज्य को संकट से बाहर निकालने में लग गए। काम को आसान बनाने के लिए दोनों ने राज्य को दो हिस्सों में बाँट लिया।
तेजपाल ने अपने हिस्से के राज्य में सख्त नियम लागू किए। लोगों को कम अनाज दिया जाने लगा। ज्यादा अनाज माँगने वालों को दंड दिया जाता।

दूसरी ओर, राजवीर ने किसानों, सलाहकारों और मंत्रियों को बुलाकर उपाय खोजे। आसपास के राज्यों से अनाज मँगवाकर लोगों को कम दाम में बेचा। कम पानी का उपयोग करके सिंचाई हो सके ऐसे उपाय किए।
धीरे-धीरे अकाल के दिन समाप्त हुए। राजवीर ने थोड़े ही समय में लोगों के दिल जीत लिए और सहानुभूति की कमी के कारण तेजपाल लोगों के मन से उतर गया।
25 Akram Express

लोगों को समझ में आ गया कि भले ही तेजपाल की बोली और शक्ल राजा जी जैसी है लेकिन राजा जी जैसी भावनाएँ, समझ और दिल तो राजवीर के पास है।

जब भविष्य के राजा का नाम घोषित करने का समय आया तो सलाहकारों ने राजा जी से विनती की कि 'राजा जी, राजकुमार राजवीर को पहचानने में हमने गलती की। संकट के समय उन्होंने अपनी सूझबूझ और बुद्धिमत्ता का उपयोग करके राज्य को बचा लिया। राजकुमार राजवीर ही आपकी तरह राज्य संभाल पाँएगे।'

राजा जी ने उनकी बात को दिल से स्वीकारा। ‘जो लोगों के दिल पर राज करे, जिसे लोग स्वीकारें, वही राजा।’
तेजपाल को अपनी गलती समझ में आ गई कि राजा जी के वर्तन का नहीं, बल्कि उनकी समझ का अनुकरण (कॉपी) करना था। राजा की असली ताकत रोब जमाकर सख्त नियम लागू करने में नहीं है, बल्कि दया भाव रखकर प्रजा के हित के बारे में सोचकर उनका भला करने में है।

थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स ने साबरमती रिवरफ्रन्ट पर 'अक्षर रिवर क्रूज़' जाने का प्लैन बनाया। सभी तैयार होकर आ गए, लेकिन थीओ नहीं दिखाई दिया।

तभी ज़ोई को कुछ दिखा और वह एकदम से हँस पड़ी, 'अरे थीओ! क्या हो गया है तुम्हें? ये सब क्या पहन रखा है और इतनी स्टाइल क्यों मार रहे हो?'

थीओ ने अपने बड़े से गॉगल्स को सिर पर चढ़ाते हुए कहा, 'क्यों? इतना फाइन तो लग रहा हूँ। मैंने क्रूज़ पर जाने के लिए पापा से मेरे लिए शॉपिंग करने के लिए कहा था।' सभी रिवरफ्रन्ट पर पहुँच गए। वे साइकलिंग करके थक गए इसलिए पास के ग्राउन्ड में चल रहे एक बुक फेस्टिवल में चक्कर मारने गए। वहाँ एक स्टॉल में एक अंकल सबको कहानी सुना रहे थे। थीओ

ऐन्ड फ्रेन्ड्स भी कहानी सुनने के लिए वहाँ बैठ गए। कहानी शुरू हुई।

सालों पहले की यह बात है। उस समय महाराष्ट्र राज्य में माधवराव पेशवा का राज था और उनके मुख्य न्यायाधीश थे, रामशास्त्री प्रभुणे।

उस समय एक महोत्सव बहुत धूमधाम से और संगीतमय वातावरण में मनाया जाता था। उस महोत्सव का नाम था, हल्दी-कुमकुम। राजमहल और राजपथ को रंगीन तोरण और तरह-तरह की रंगोली से सजाया जाता था।

विशेष तौर पर स्त्रियों के लिए यह महोत्सव आयोजित किया जाता था। राज्य की गरीब स्त्रियाँ भी खुलकर उत्सव में भाग ले सकें इसलिए राजा अपने राज्य के खजाने में से धन खर्च करते थे। महोत्सव के समय राजमहल और राजपथ को रंगीन तोरण और तरह-तरह की रंगोली से सजाया जाता था।

उत्सव का दिन था। पेशवा माधवराव कीमती वस्त्र पहनकर आ गए थे। सबसे ज्यादा उत्साह तो महारानी को था। उन्होंने हीरे, माणिक और मोती के कीमती गहनें और रेशमी वस्त्र पहने थे। अपने सौंदर्य को निहारने के लिए महारानी थोड़ी-थोड़ी देर में दर्पण में देख लेती थीं।

उत्सव में भाग लेने के लिए सभी आ गए थे। सिर्फ न्यायाधीश की पत्नी नहीं आई थीं। आतुरता से उनका इंतज़ार किया जा रहा था। महारानी ने सोचा, 'शायद तैयार होने में समय लग गया होगा।'

तभी न्यायाधीश की पत्नी आ गई। सभी ने उनका स्वागत किया। लेकिन उन्हें देखकर महारानी का चेहरा उतर गया। महारानी को न्यायाधीश की पत्नी

के सादे वस्त्र और साधारण श्रृंगार उचित नहीं लगे। महारानी ने उनसे विनती करते हुए कहा, 'आपकी पोशाक इस उत्सव के अनुरूप नहीं है। मेरी दासियाँ आपको कुछ वैभवशाली वस्त्र देंगी, उन्हें पहन लीजिए।' न्यायाधीश की पत्नी को संकोच हुआ, लेकिन महारानी के अनुरोध के आगे उनकी एक नहीं चली और आखिरकार उन्होंने वस्त्र बदल लिए। जब उन्होंने अपने आपको दर्पण में देखा तो महारानी के वस्त्र उन्हें बहुत पसंद आए।

उत्सव के बाद वे अपने सादे वस्त्र पहनने जा रही थीं, तो महारानी ने उनसे कहा, 'आज से ये वस्त्र आपके हैं। आप यही राजसी वस्त्र पहनकर शाही पालकी में बैठकर अपने घर वापस जाइए।' उन्होंने महारानी की बात को तुरंत स्वीकार कर लिया।

जब न्यायाधीश रामशास्त्री ने अपनी पत्नी को राजसी वस्त्रों में शाही पालकी से उतरते हुए देखा तो उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, 'आप गलत पते पर आ गई हो' और ऐसा कहकर घर का दरवाजा बंद कर दिया।

न्यायाधीश की पत्नी समझ गईं। राजमहल जाकर अपने साधारण वस्त्र पहनकर वे घर वापस आईं। दरवाजा खटखटाया तो तुरंत ही रामशास्त्री ने अपनी पत्नी का अंदर स्वागत किया।

जब न्यायाधीश की पत्नी ने पहली बार दरवाजा बंद करने का कारण पूछा तो रामशास्त्री ने बताया, 'हमारे आभूषण तो हमारे गुण और सादगी हैं, हमारी सरलता और स्वच्छता है। हमें बाहरी दिखावा करने की क्या ज़रूरत है?' पत्नी ने रामशास्त्री की बातों को दिल से स्वीकार किया।

'तो कैसी लगी कहानी?' अंकल ने सभी से पूछा।

बच्चों ने कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर बाद थीओ खड़ा हुआ और बोला, 'कहानी तो बहुत पसंद आई, अंकल।' और सिर से गॉगल्स उतारते हुए कहा, 'मैंने फिल्म में समय कपूर को ऐसे गॉगल्स पहनते हुए देखा था। इसलिए मैंने जिद करके वैसे ही गॉगल्स खरीदे। मुझे गॉगल्स नहीं पहनने चाहिए थे।'

अंकल ने प्रेम से थीओ से कहा, 'बेटा, गॉगल्स पहनने में कोई हर्ज़ नहीं है। लेकिन, किसी की नकल करने के लिए हम क्यों जिद़ करें?'

अंकल की बात थीओ ठीक से समझ गया।

गुजराती अक्रम एक्सप्रेस अब **Audio** में भी उपलब्ध... लेकिन कहाँ? चलो, जानें।

स्टेप-१

वेबसाइट खोलो...

https://kids.dadabhagwan.org

स्टेप-२

अक्रम एक्सप्रेस मैगज़ीन गुजराती भाषा में खोलो...

स्टेप-३

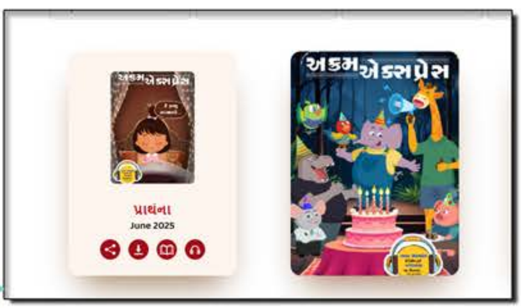

मैगज़ीन के फोटो पर क्लिक करो, तो ४ बटन दिखेंगे।

स्टेप-४

इस बटन से...

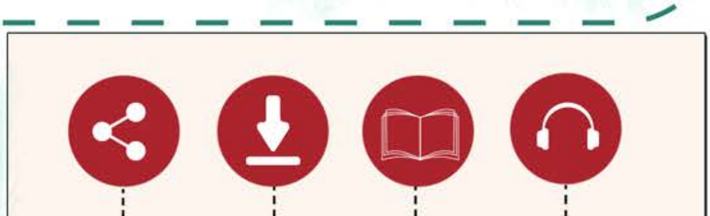

शेयर करो।

डाउनलोड करो।

ऑनलाइन पढ़ो।

ऑडियो प्राप्त करो।